ः आरती श्रीदेवीची ः

जय जय जगदंबे। श्री अंबे। रेणूक कल्पक दंबे। जय जय जगदंबे ॥

अनुपम स्वरूपाची । बहुदाठी। अन्य नसे या सृष्टीं।
तुजसम रूपदुसरे। परमेष्टी। करीता झाला कष्टी ।
शशी रस रसरसला। वदनपुरी। दिव्य सुलोचन सृष्टी ।
सुवर्णरत्नांच्या। शिरीमुकुठी ।लोपती रवी शशी कोटी ।
गजमुख तुज स्तविले। हे अम्बे। मंगल सकलारंभे ।। 1 ।।

कुंकुम चिरी शोभे। मळवटी। कस्तुरी तिलक ललाटी।
नासिक अतिसरळ। हनुवठी। रूचिरामृत रस ओठी।
समान जणूं लवल्या। धनुकोटी । अकर्ण लोचन भृकुटी।
शिरी नीट भांगावाली । उफराटी। कर्नाटकची दाटी।
भुजंग नीळ रंगा। परी शोभे। वेणी पाठीवरी लोंबे ।। 2 ।।

कंकण कनकांच्या। मनगटी। दिव्य मुदा दशबोटी।
बाजुबंद जडे। बाहुवटीं। चर्चुनी केशर ओठी।
सुवर्णरत्नांचे। हार कंठी । बहुमोत्यांची दाटी।
अंगी नवी चोळी। जरी काठी। पीत पीतांबर तणठी।
पैंजण पदकमळी। अतिशोभे। भ्रमर धावती लोभे ।। 3 ।।

साक्षात तूं क्षितीजा। तळवटी। तुच स्वये जग डोही।
ओवाळीन आरती। दीपदाटी। घेवुनी कर संपुष्टी।
करूणामृत हृदये। संकष्टी। धावसी भक्तांसाठी ।
विष्णूदास सदा। बहुकष्टी। देशील जरी नीज भेटी।
तरी मज काय उणे। या लाभे। धांवपाव अविलंबे ।। 4 ।।